20 सितम्बर 2018 को राजौरी गार्डन, नई दिल्ली में श्रीकृष्ण प्रणामी विश्व परिषद् द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय महामति प्राणनाथ जन्म चतुर्थ शताब्दी महामहोत्सव में प्रमुख अतिथि के रूप में माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण।

———

1. आज मध्यकालीन भारत के महान संत आदरणीय महामति प्राणनाथ के चतुर्थ जन्म शताब्दी समारोह में आप सबके बीच आकर मैं गौरवान्वित हूं। उनका जन्म 1618 ईसवी में हुआ था। उनके जन्म के समय में भारत की सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति बहुत ही उथल–पुथल भरी थी। लेकिन उन्होंने अपनी आध्यात्मिक तेजस्विता एवं सद्गुणों से सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक एकता व समरसता का जो मार्ग दर्शाया, वह सदैव अनुकरणीय रहेगा। सन् 1694 में वे इस जगत से महाप्रयाण कर गए थे।

2. विश्व धर्म एकता, मानवता एवं वैश्विक समस्याओं के आध्यात्मिक समाधान के पक्षधर महामति प्राणनाथ एक युगचेता महापुरुष थे जिन्होंने तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों को दूर करने का भरसक प्रयास किया। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी वे अपने विचारों पर अडिग रहे, तत्कालीन राजसत्ता को ललकारा, धर्म के नाम पर हो रही खींचातानी एवं मत–विभिन्नता को समाप्त कर विश्व धर्म को स्वीकार स्वरूप खड़ा किया।

3. उनके द्वारा रचित 18758 चौपाइयों वाला संकलन 'कुलजम स्वरूप अथवा तारतम सागर' अध्यात्म ज्ञान का एक विशाल महाग्रंथ है। आज के आधुनिक वैज्ञानिक युग में सत्याधारित जिस स्पष्ट एवं युगानुकूल धर्म की परिभाषा की आज आवश्यकता है, उसका मनन, चिन्तन महामति प्राणनाथ जी महाराज ने आज से 350 वर्ष पूर्व किया था।

4. वे कहते थे कि परमात्मा को भले ही भिन्न–भिन्न नामों से पुकारा जाता है, सम्प्रदाय भी अलग–अलग हैं, परंतु नानक जी की तरह उन्होंने भी यही कहा कि **'एक नूर सब जग उपजा'।** अर्थात् एक ही ईश्वर है जिससे सम्पूर्ण जगत की उत्पत्ति हुई है। इसलिए इस यथार्थ को समझना एवं विविध धर्मानुयायियों के बीच आपस में सामंजस्य स्थापित करना समय की आवश्यकता है।

5. महामति के व्यक्तित्व निर्माण में उनकी यायावरी वृति एवं कठिन संघर्ष ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने पाया कि विभिन्न मत–मतान्तर, उनकी विविध जातीय पहचान (खान, पान, गान) के साथ सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि तमाम विविधताओं के बावजूद यहां तक कि भाषा, बोली बदल जाने पर भी हमारे समाज एवं लोगों के दिल आपस में कितने मिले हुए हैं। इनमें समान रूप से उपस्थित मानवीय आस्था निश्चय ही किसी शक्ति द्वारा नियंत्रित/परिचालित हैं। बस उसको पहचानने एवं उस नूर या सत्य का प्रकाश फैलाना ही महामति के जीवन का उद्देश्य बन गया था और इसी का प्रचार–प्रसार उन्होंने किया।

6. गुरू–शिष्य परम्परा के तहत परमहंस स्वामी देवचन्द्र जी ने उनको बीजमंत्र दिया। स्वामी देवचन्द्र जी एवं महामति का यह संबंध ऐतिहासिक व आध्यात्मिक था, जिसने भारत में न केवल सामाजिक, बल्कि धार्मिक व सांस्कृतिक क्षेत्र में भी नवजागरण की भूमिका तैयार की।

7. धर्म एवं अध्यात्म संबंधी सच्चा ज्ञान गुरू बड़ी ही सहजता एवं आत्मीयता से शिष्यों को दे देते है। यही ज्ञान समाज में व्यापक परिवर्तन ला सकता है। धर्म के विषय में शास्त्रों में वर्णित हैः–

''अनित्यानि शरीराणि विभवो नैव शाश्वतः।
नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्त्तव्यो धर्मसंग्रहः।।''

अर्थात्, शरीर नाशवान है, धन–संपत्ति भी हमेशा रहनेवाली नहीं है, मृत्यु सदा सिरहाने खड़ी है, अतः, हमें धर्म का संचय व धर्म का आचरण ही सदैव करना चाहिए।''

8. हमारी संस्कृति और विरासत का यही मूल मंत्र है जिससे स्वाभाविक रूप से हमने सभी जीवों के प्रति सहनशीलता, अहिंसा, समानता और करूणा का भाव अपनाया है। हमारी सभ्यता एवं संस्कृति हमें यही सिखाती है कि हम आपस में मिलजुलकर, शांतिपूर्ण ढंग से अपने आराध्यदेव की आराधना करते हुए सरलता से जीवनयापन करें।

9. उन्होंने शुद्ध आहार, शुद्ध विहार, शुद्ध विचार एवं शुद्ध व्यवहार पर ज़ोर दिया। आंतरिक पवित्रता के विषय में वे कहते हैंः–

''अन्दर नाहीं निरमल, फेर फेर नहावे बाहर।

कर देखावे कोट बेर, तोहे ना मिलो करतार।।''

(अर्थात् हृदय शुद्ध नहीं है तो बार–बार स्नान कर बाह्य आचरण करने से कभी परमात्मा नहीं मिलते।)

10. उस काल में भी महामति प्राणनाथ ने विपरीत परिस्थितियों में फंसे महाराज छत्रसाल को अपना शिष्य माना एवं उन्हें परम ज्ञान, आत्मबल एवं शौर्य की प्रतीक अपनी तलवार उन्हें भेंट की एवं युद्ध में विजयी होने का आशीर्वाद दिया। तत्पश्चात् महाराज छत्रसाल ने अपने गुरू प्राणनाथ का सदैव सम्मान किया एवं उनके संरक्षण में एक आदर्श राज्य की स्थापना की।

11. महामति प्राणनाथ जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव कल्याण तथा मानव उत्थान के लिए समर्पित किया। उन्होंने सर्वधर्म समभाव, अहिंसा, सौहार्द, निर्भीकता एवं सच्चाई के मार्ग पर चलने का संदेश दिया। उन्होंने देश, धर्म और संस्कृति की रक्षा हेतु संगठित होने का आह्वान किया। वे जातिरहित, पंथरहित एवं वर्ग–वर्ण विहीन परंतु संगठित समाज निर्माण में विश्वास रखते थे।

12. अपने अध्ययन व ज्ञान से महाप्रभु प्राणनाथ जी ने विश्व भर के प्रमुख धर्मों के मूल सिद्धांतों, नियमों, अनुशासनों को आत्मसात किया और एक सर्व अनुगामी, सर्व स्वीकार्य, सर्व कल्याणकारी विश्व धर्म की नींव डाली, जिसमें सर्व धर्म सद्भाव एवं समन्वय तो है ही, प्रत्युत् आंतरिक रचनात्मकता का मूल स्वर भी बड़ा मधुर है।

13. मुझे बताया गया है कि वर्तमान में इस सम्प्रदाय के देशभर में 800 केन्द्र हैं तथा उनके अनुयायियों की संख्या 1 करोड़ से अधिक हैं। इस संस्था के अधिकांश केन्द्रों द्वारा सम्पूर्ण भारत में समाज के कल्याणार्थ स्कूल, कॉलेज, धर्मशाला, अस्पताल, संस्कृत विद्यालय, वृद्ध आश्रम एवं अनाथ आश्रम संचालन जैसे जनकल्याणकारी कार्य चलाए जा रहे हैं। मुझे बताया गया है कि संस्था द्वारा अनेक गौशालाएं चलाई जा रही हैं। वे समाज के हित में अनाथ कन्यायों का विवाह करवाते हैं एवं पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम में भी इस संस्था ने बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया है।

14. मुझे पता चला है कि हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की मां पुतलीबाई भी प्रणामी संप्रदाय की थी। उन्होंने अपनी पुस्तक ''सत्य के साथ मेरे प्रयोग'' में इस संप्रदाय के बारे में उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा था कि ''प्रणामी ऐसा संप्रदाय है जिसमें कुरान और गीता दोनों का सर्वोत्तम प्राप्त होता है, एक लक्ष्य की खोज – ईश्वर।

15. आज इस महोत्सव में देश–विदेश से, विशेषकर अमेरिका, कनाडा, दुबई एवं कतार जैसे देशों से **''प्रणामी समुदाय''** के अनुयायी यहां एकत्रित हुए हैं, उन सभी का हार्दिक अभिनंदन है। वास्तव में आप सभी विदेशों में हमारे देश के सांस्कृतिक दूत हो। आपको देख कर हमें गर्व की अनुभूति भी हो रही है।

16. आज इस अवसर पर जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के निवृत्त प्रोफेसर एवं हिन्दी के सुपरिचित लेखक डॉ. रणजीत साहा को महामति प्राणनाथ पुरस्कार

से सम्मानित किया जा रहा है जिन्होंने महामति प्राणनाथ के सामाजिक–साहित्यिक एवं ऐतिहासिक योगदान का प्रामाणिक आकलन प्रस्तुत किया है। पिछले तीस वर्षों से उन्होंने महामति वांगमय पर निरंतर शोध कार्य किया है एवं कई कृतियां सम्पादित की हैं। इसके लिए उन्हें पुरस्कृत करते हुए मुझे बहुत हर्ष का अनुभव हो रहा है।

17. आज उस महान आत्मा को, उनके कृतित्व को एवं उनके आदर्श को स्मरण करने के लिए एवं उनका अनुकरण करने के लिए हम लोग यहां एकत्रित हुए हैं जो वास्तव में हमारे देश की सांस्कृतिक बहुलता एवं आध्यात्मिक एकता की प्रतीक है। मैं यह भी मानती हूं कि **प्रणामी सम्प्रदाय** की सर्वधर्म समभाव, प्रेम, शांति, भाईचारा एवं '**सुन्दर साथ**' की अवधारणा वास्तव में प्रेरणादायी है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इस महोत्सव का आयोजन बहुत ही समयानुकूल एवं प्रासंगिक है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' एवं ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' की जो हमारी शाश्वत संस्कृति रही है, उसी का विस्तार मैं यहां देखती हूं।

धन्यवाद।

———